

और सागर जो मेहेरका, सो सोभा अति लेत ।
 लेहेरें आवे मेहेर सागर, खूबी सुख समेत । १।
 हुकम मेहेर के हाथमें, जोस मेहेर के अंग ।
 इसक आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग । २।
 पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत ।
 हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसवत । ३।
 मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम ।
 जलुस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम । ४।
 ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर ।
 जायें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर । ५।
 दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखेऊपर का जहूर ।
 जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखर होत हक से दूर । ६।
 मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहिं ।
 आखर लग तरफ धनीकी, कमी कछू ए आवत नाहिं । ७।
 मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व ।
 पिंड ब्रह्मांड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत । ८।
 ए दुख रूपी इन जिमीमें, दुख न काहूं देखत ।
 बात बडी है मेहेर की, जो दुखमें सुख लेवत । ९।
 सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर ।
 दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर । १०।
 इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखे दुख दूर ।
 कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर । ११।
 मैं देख्या दिल बिचार के, इसक हक का जित ।
 इसक मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित । १२।
 अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक ।
 मेहेर सब विध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक । १३।
 जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पहले मेहेरें बनावेवजूद ।
 गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूकत माहें बूद । १४।
 मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चंवर सिर छत्र ।
 सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र । १५।
 बोली बोलावेमेहेर की, और मेहेरै का चलन ।
 रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन । १६।
 बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम ।
 रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इसक इलम । १७।
 जित मेहेर तित सब हैं, मेहेर अव्वल लग आखर ।
 सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर । १८।
 एह जो दरिया मेहेरका, बातून जाहेर देखत ।
 सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत । १९।
 बीच नाबूद दुनीय के, आई मेहेर हक खिलवत ।
 तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत । २०।
 बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोचत ।
 ए मेहेर हककी बातूनी, नजर माहें बसत । २१।
 ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत ।
 जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत । २२।
 बरनन करूं क्यों मेहेरकी, जो बसत है हक के दिल ।
 जाको दिलमें लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल । २३।
 बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक ।
 जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक । २४।
 बात बडी है मेहेरकी, जित मेहेर तित सब ।
 निमख न छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब । २५।
 जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।
 मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर । २६।
 बात बडी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर ।
 अंकुर सोई हक निसबती, माहें बसत तजल्ला नूर । २७।
 ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम ।
 मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इसक इलम । २८।
 मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।
 मेहेर इसक हक अंग है, मेहेर इसक प्रेम काम । २९।
 काम बडे इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।
 मेहेर होत जिन ऊपर, ताय देत आप माफक । ३०।
 मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमन ।
 मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फिरस्तन । ३१।
 मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
 कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान । ३२।
 दर्ई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत ।
 मेहेरें दर्ई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत । ३३।
 सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखरत ।
 मेहेर समझे मोमन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत । ३४।
 ए मेहेर मोमिनो पर, एही खासल खास उमत ।
 दर्ई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनो बरकत । ३५।
 मेहेरें खेल देख्या मोमिनो मेहेरें आए तलें कदम ।
 मेहेरें क्यामत करके, मेहेरें हंसके मिले खसम । ३६।
 मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार ।
 मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नाही सुमार । ३७।
 जो मेहेर ठाडी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।
 मेहेर पलमें बडे कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए । ३८।
 मेहेरें दिल अरस किया, दिल मोमिन मेहेर सागर ।
 हक मेहेर ले बैठे दिलमें, देखो मोमिनो मेहेर कादर । ३९।
 बात बडी है मेहेर की, हक के दिलका प्यार ।
 सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार । ४०।
 जो एक वचन कहूं मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए ।
 अपार उमर अपार जुबांए, तो मेहेर को हिसाब न होए । ४१।
 निपट सागर बडा आठमा, ए मेहेर को नीके जान ।
 जो मेहेर होए तुफ ऊपर, तो मेहेर की होए पेहेचान । ४२।
 सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब ।
 ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कैकोट करूं किताब । ४३।
 ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।
 ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर । ४४।
 महामत कहें ऐमोमिनो, ए मेहेर बडा सागर ।
 सो मेहेर हक कदमों तलें, पीओ अमीरस हक नजर । ४५।